History (I)

B.A. PART – II PAPER – III

प्रश्न – इल्तुतमिश की उपलब्धियों की समीक्षा करें ?

उत्तर – स्वाभाविक वंशानुगत उत्तराधिकारी के दावो को दरकिनार करके गुलाम के गुलाम शम्सुद्दीन इल्तुतमिश 1210 में ऐबक की असमायिक तिरोधान हो जाने पर सत्ताधीन हुआ। लेकिन नवजात तुर्की सल्तनत चतुर्दिक झंझावातो के थपेड़ो से आक्रान्त था। क्योंकि स्थानीय शक्तियों विशेषकर (महत्वकांक्षी राजपूत) के अतिरिक्त स्वयं अभिजात्य तुर्क सरदार (गजनी का एल्दौज और सुल्तान का कुबाचा) और दिल्ली के विक्षुब्ध अमीर सुल्तान के रूप में इल्तुतमिश को स्वीकार करने के लिए तैयार न था। ऐसी कंकटाकीर्ण विषम परिस्थितियों में अदम्य धैर्य एवं रण चातुर्य की विलक्षणता से बदायूँ के भूतपूर्व गवर्नर ने न केवल अपनी सत्ता को अक्षुण्ण रखा, बल्कि सकल विस्तारवादी नीति द्वारा दिल्ली सल्तनत की सरहद को वृहत आधारशिला प्रदान किया।

अपने प्रबल प्रतिद्वन्दियों से निपटने के पूर्व इल्तुतमिश ने दिल्ली के महत्वाकांक्षी अमीरों को अपने प्रति आस्थावान रहने के लिए विवश किया। एल्दौज को निर्णायक रूप से परास्त करने का स्वर्णिम अवसर तब आया जब ख्वारिज्म शाह ने

Scanned with CamScanner

पराजित होकर एल्दौज गजनी से भागकर लाहौर आया। 1215-16 के तराईन युद्ध में एल्दौज पराजित हुआ एवं बन्दी बना लिया गया। एल्दौज का हश्र देखकर कुबाचा के हौसले पस्त हो गए और इल्तुतमिश के लिए सिरदर्द नहीं रहा।

प्रतिद्वन्द्वियों के दावों को नकारने के बाद भी वह चैन की बंशी बजाने की स्थिति में नहीं था। क्योंकि दिल्ली सल्तनत पर खूँखार मंगोलो का मनहुस साया मंडराता नजर आया। वैसे तो मंगोल सरदार चंगेज खां का 1221 ई० में सिन्ध तक आ पहुँचना किसी सुनियोजित भारत विजय अभियान कारण नहीं था। वह ख्वारिज्म के शहजादा मंगबनी खाँ का पीछा करते हुए सिन्ध तक आया था। लेकिन मंगोलो आक्रमण की संभावना से बिल्कुल इंकार नहीं किया जा सकता था लेकिन कूटनीतिक सुझ-बुझ का परिचय देते हुए इल्तुतमिश ने जलालउद्दीन की सरण देने की अपील को विनम्रता पूर्वक ठुकराकर दिल्ली सल्तनत को चंगेजी पंजों के गीरस्त से बचाया।

पश्चिमी सीमा को सुरक्षित कर वह साम्राज्य विस्तार की ओर उन्मुख हुआ। इस क्रम में उसने बंगाल और बिहार के शासक की उमड़ती महत्वकांक्षा को लखनौती के युद्ध (1226-27) में परास्त

कर कुचल दिया। बंगाल का विलयन दिल्ली सल्तनत में हो गया।

पूर्वी भारत में विजय पताका लहराने के पश्चात उसने राजपूताना क्षेत्र में वर्चस्व कायम करने की ठानी। 1226 से 1254 तक वह राजपूतों से लगातार जुझता रहा। इस क्रम में उसने रणथौम्भर, ग्वालियर, मालवा, उज्जैन, आदि को अपने प्रभाव क्षेत्र में लाया एवं अपना अधिकार जमाया।

इस बीच 1229 ई० में उसने बगदाद के खलीफा (इस्लाम धर्म के धर्म गुरू) से शक्ति का अधिकार प्राप्त किया। इस अधिकार पत्र ने सुल्तान के भारतीय प्रदेशो पर शासन करने के अधिकार को न्यायित बना दिया। साथ ही साथ उनलोगों ने इल्तुतमिश के खिलाफ साजिशे बन्द कर दी। जो उसको एक अपहरणकर्ता सुल्तान के रूप में देखते थे।

इल्तुतमिश को भारत में प्रथम इस्लामी साम्राज्य के वास्तविक संस्थापक के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। क्योंकि तथाकथित गुलाम-वंश के निर्माता ऐबक की आकस्मिक मृत्यु से दिल्ली सल्तनत की बुनियादे ढीली नहीं हो पायी थी। वस्तुतः इल्तुतमिश ने न केवल ऐबक की विजयों को दृढ़ किया बल्कि

Scanned with CamScanner

सुदूर दक्षिणी प्रान्तो को छोड़कर प्रायः भारत में इस्लामी सार्वभौम सत्ता की शुरूआत इल्तुतमिश से ही होती है।

युद्धो की निरन्तरता के बावजूद उसकी सांस्कृतिक चेतना समृद्ध थी। उसने उन तमाम व्यक्तियो को संरक्षण दिया जो मंगोलो के आक्रमण से विस्थापित होकर उसके दरबार मे आए। उसे दरबार की शोभा बढ़ाने वालो में मिन्हाज-उस-सिराज, ताजउद्दीन जुनैदी मालिक कुतुबद्दीन आदि शामिल थे। दिल्ली उसके समय मे केवल भारत मे तुर्की साम्राज्य का राजनीतिक और प्रशासनिक केन्द्र मात्र बना रहा, बल्कि सांस्कृतिक गतिविधियो का आकर्षक स्थल बन गया।

इल्तुतमिश एक धर्मवीर शासक भी था। सूफी संतो के लिए वह विशेष श्रद्धा रखता था। प्रसिद्ध सूफी संत कुतुबुदीन बख्तियार की यादगार मे उसने कुतुबमिनार का निर्माण कराया लेकिन उसमे धार्मिक सहिष्णुता नहीं थी तभी तो उसने मिलाम और उज्जैन

END